अभिलेखी प्राकृत

इकाई - 4. सम्राट कक्कुक के घटयाल प्रस्तरलेख

Q-1. सम्राट कक्कुक के घटयाल प्रस्तर लेख का परिचय एवं सारांश लिखें।

Ans.

सम्राट कक्कुक घटयाल प्रस्तर लेख का परिचय

सम्राट कक्कुक राजा का यह शिलालेख, जोधपुर से बीस मील उत्तर की ओर घटयाल नामक गाँव में स्थित है। इसकी भाषा प्राकृत है तथा इसकी लिपी ब्राह्मी है। इस शिलालेख का सर्वप्रथम प्रकाशन मुंशी देवी प्रसाद ने सन् 1895 में जर्नल ऑफ द रोयल एशियाटिक सोसाइटी के पृष्ठ - 513 पर किया था

शिलालेख की तिथि वि०सं० 918 ई०सन 861) है। इस अभि अभिलेख में कक्कुक की सविस्तार वंशावली तथा कार्यों का वर्णन है। यह अभिलेख पद्यात्मक है अर्थात कुल तेईस गाथाओं में अंकित है।

सारांश → कक्कुक शिलालेख, भगवान जिननाथ को नमस्कार से प्रारम्भ होता है। इसके बाद कक्कुक की वंशावली का सविस्तार वर्णन है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण की भद्रा नाम की क्षत्रियाणी पत्नी थी। उनसे एक अत्यन्त पराक्रमी रज्जिल नाम

नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस रजिजल का नरभट्ट तथा नरभट्ट का नाहड और नाहड का ताट और ताट का पुत्र यशोवर्द्धन हुआ। यशोवर्द्धन से चन्दुक, चन्दुक का शिल्पुक, शिल्पुक का झोट और झोट का भिल्लुक नाम का पुत्र हुआ जो अत्यन्त त्यागी था इस भिल्लुक पिता और दुर्लभ देवी माता का पुत्र श्री कक्कुक हुआ जो श्रेष्ठ गुणों से गौरवान्वित था। यह कक्कुक मन्दमुस्कान वाला सभी को सम्यक् दृष्टि से देखने वाला, प्रजा का हित-सुख का ध्यान रखने वाला कृपालु, दानी आदि कई गुणों का स्वामी था। वह न्यायप्रिय राजा था। बिना किसी ईर्ष्या द्वेष एवं अहंकार के दुष्टजनों को कठोर दंड देनेवाला था। वह बच्चों के लिए गुरु, युवकों के लिए मित्र तथा वयोवृद्धों के लिए पुत्र के समान था, अर्थात प्रजा प्रिय राजा था। कक्कुक के इन सद्गुणों वयोवृद्धों के लिए पुत्र के समान था अर्थात प्रजा प्रिय राजा था। कक्कुक के इन सद्गुणों के प्रति सिर्फ अपने देश में ही नहीं बल्कि सीमावर्ती प्रदेशों की प्रजा में भी अनुराग उत्पन्न हो गया था।

इस शिलालेख से ज्ञात होता है कि कक्कुक ने प्रजा के हित-सुख के लिए वट-नामक मंडल को जो संभवतः जंगली क्षेत्र था आग लगाकर कृषि योग्य बनाया था, तथा उस भूमि को नीलकमलों, आम महुआ के वृक्षों एवं ईखों से आच्छादित कर दिया था। विक्रम संवत् 918 के चैत्र शुक्लपक्ष द्वितीया दिन बुधवार को हस्तनक्षत्र में अपनी यश कीर्ति के विस्तार हेतु रोहिन्सकूप नाम के ग्राम में महाजनों, ब्राह्मणों प्रहरियों सेना तथा बहुत

प्रकार के व्यापारियों के लिए उसने एक बाजार (हाट) का निर्माण कराया था। उसने मड्डोअर और सौ हिन्सकुप नाम के गाँवों में एक-एक की निहंतम -रम भी स्थापित करवाया था। उसने सभी प्रकार के पापों को नष्ट करनेवाले तथा सभी प्रकार सुखों को प्रदान करने वाले जिनदेव (वीतरागी भगवान) का एक मंदिर भी बनवाया था तथा उस मंदिर को सिद्ध धणेश्वर के गच्छ में होनेवाले सन्त, जम्ब अम्बय, बणिक नाकुट आदि प्रमुखों की गोष्ठी को अर्पित कर दिया था।

Scanned with CamScanner